प्रेस विज्ञप्ति

गोविन्द बल्लभ पंत कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय पंतनगर, जिला- ऊधमसिंह नगर (उत्तराखण्ड)

पंतनगर की काव्य गोष्ठी में हिन्दी व वर्तमान परिस्थितियों पर हुयीं कविताएं

पंतनगर। १३ सितम्बर, २०१८। पंतनगर विश्वविद्यालय के प्रकाशन निदेशालय द्वारा आयोजित किये जा रहे हिन्दी सप्ताह के अंतर्गत कल सायं विज्ञान एवं मानविकी महाविद्यालय के पर्यावरण विभाग के सभागार में एक काव्य गोष्ठी का आयोजन हुआ, जिसमें पंतनगर सहित आस-पास के क्षेत्र, यथा बरेली, गदरपुर, हल्द्वानी, रामपुर, बाजपुर, किच्छा, शक्तिफार्म एवं मुज़फ्फरनगर के प्रख्यात कवियों ने भागीदारी की। सायं ३:३० बजे से प्रारम्भ हुई यह गोष्ठी देर शाम तक अनवरत चलती रही। अधिकतर कवियों की रचनाएं हिन्दी के साथ-साथ आज के हालातों, भ्रूण हत्या, पहाड़ की स्थिति, बेटी, देश भक्ति इत्यादि पर केन्द्रित रहीं।

काव्य गोष्ठी का प्रारम्भ आई.वी.आर.आई., बरेली, से आयीं कवियित्री, गीता चौहान द्वारा गायी गई सरस्वती वंदना से हुआ। पर्यावरण विभाग के प्राध्यापक, डा. वीर सिंह, ने अपनी कविता ''उंगली गाड़ो जड़ें फूट आएं, ऐसी है भारत की मिट्टी'' से कविताओं के क्रम को प्रारम्भ किया। रामपुर से आये प्रख्यात कवि जितेन्द्र कमल आनन्द ने 'हिन्दी है भारत की बिंदी' कविता से हिन्दी की महत्ता को उजागर किया तथा 'जो पिता से प्यार करती वो हमारी बेटियां' से भारत की बेटियों की विशेषताएं बतायी। उत्तराखंड की लता मंगेशकर के नाम से प्रसिद्ध पंकज पांडे ने 'ए मेरे वतन के लोगों जरा आंख में भर लो पानी का' सुरीली आवाज में गायन किया। बाजपुर के कवि राजेश कुमार राणा ने 'मां' की महिमा को तरन्नुम से गजल में प्रस्तुत किया। कवि नवी अहमद मंसूरी ने भी हिन्दी के प्रति अपने प्रेम को अपनी कविता ''हां मैं उर्दू वाला हूं, हिन्दी का चाहने वाला हूं'' के द्वारा दर्शाया। पंतनगर की कवियित्री राधा बाल्मिकी ने अपनी कविता में गंगा का बहुत ही सार-गार्मित वर्णन किया तथा उसको पवित्र निर्मल बनाये रखने का संदेश दिया। हल्द्वानी से आये डा. अंकुर ने हिन्दी के गुणगान के बाद अपनी व्यंग भरी कविता सुनायी। प्रकाशन निदेशाय में कार्यरत कवियित्री, अरूणा मल्ल, ने हिन्दी की विशालता का जोरदार वर्णन किया। विश्वविद्यालय के पूर्व छात्र अरविंद मटियानी ने पहाड़ों की खूबसूरती व विषमता का वर्णन किया तथा युवाओं को हिन्दी का महत्व समझाया। शक्तिफार्म से आयीं कवियित्री पुष्पा जोशी ने हिन्दी की शोचनीय स्थिति व तिरंगे की शान पर कविता सुनायी। गदरपुर के कवि बलदेव अरोड़ा ने मंहगाई व नोट बंदी पर अपनी रचना प्रस्तुत की। बाजपुर के कवि विवेक चौहान ने अपनी ओज भरी प्रस्तुति के साथ अपनी रचना 'हिन्दी भाषा पूरे हिन्दुस्तान की शान है' प्रस्तुत की। डा. गीता चौहान ने भी हिन्दी पर ''जय हो जय हो जय होवे, मां हिन्दी तेरी जय होवे'' के साथ देश, पंतनगर व बेटी पर अपनी मार्मिक कविता प्रस्तुत की। पंतनगर के डा. ओम शंकर मिश्रा ने अपनी कविता ''इस कदर ऐतबार कौन करे, जैसा करते है यार कौन करे'' की प्रस्तुति से खूब तालियां बटोरी। अंत में मंच का संचालन कर रहे कवि के.पी. सिंह 'विकल' ने अपनी कविता ''हम को अपनी जां से प्यारी है हिन्दी'' का लयबद्ध गायन किया।

कार्यक्रम की अध्यक्षता डा. नरेश कुमार, प्रभारी अधिकारी प्रकाशन, ने की इस अवसर पर मुख्य अतिथि डा. वीर सिंह, प्राध्यापक, पर्यावरण विभाग एवं विशिष्ट अतिथि, डा. जे.पी.एन. राय, प्राध्यापक एवं विभागाध्यक्ष, पर्यावरण विभाग व डा. बीरेन्द्र कुमार, प्राध्यापक, रसायन विज्ञान विभाग थे। काव्य गोष्ठी के अंत में अध्यक्ष एवं अतिथियों द्वारा सभी कवियों, को स्मृति चिन्ह् प्रदान कर सम्मानित किया गया। डा. नरेश कुमार ने कवियों एवं श्रोताओं का धन्यवाद करते हुए ऐसे प्रयासों को आगे भी बनाये रखने की बात कही। इस अवसर पर प्रकाशन निदेशालय, संचार केन्द्र व विश्वविद्यालय के विभिन्न विभागों के कर्मचारी व अधिकारी उपस्थित थे।

पंतनगर विश्वविद्यालय में हिन्दी सप्ताह के अंतर्गत आयोजित काव्य गोष्ठी में प्रतिभाग करने आए कवियों के साथ डा. नरेश कुमार, डा. वीर सिंह एवं डा. बीरेन्द्र कुमार।